प्रातःक्लास 21/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बाप बैठ रूहानी बच्चों को समझाते हैं। इसको कहा जाता है रूहानी ज्ञान वा स्प्रीचुअल नॉलेज। स्प्रीचुअल नॉलेज सिर्फ़ एक रूहानी बाप ही दे सकते हैं। और कोई भी मनुष्य मात्र में रूहानी नॉलेज होता नहीं। रूहानी नॉलेज देने वाला एक ही है। जिसको ही ज्ञान सागर कहा जाता है। हर एक मनुष्य में अपनी–2 खूबी होती है। बैरिस्टी बैरीस्टर है, डॉक्टर डॉक्टर है। हरेक की डियूटी पार्ट अलग–2 है। हरेक की आत्मा को अपना पार्ट मिला हुआ है। कितनी छोटी आत्मा है। वण्डर है ना। गाते भी है भृकुटि के बीच चमकता है गज़ब सितारा। यह भी गाया जाता है निराकार आत्मा का शरीर है तख़्त है। बहुत छोटी सी बिन्दी। और सभी आत्माएं एक्टर्स हैं। एक जन्म के फीचर्स न मिले दूसरे से। एक जन्म का पार्ट न मिले दूसरे से। किसको भी पता नहीं हम पास्ट में क्या थे। फिर फ्युचर क्या बनेंगे। यह बाप ही संगम पर बैठ समझाते हैं। सुबह को तुम बच्चे याद की यात्रा में बैठते हो। तो बुझी हुई आत्मा प्रज्वलित होती रहती है; क्योंकि आत्मा में बहुत जंक लगी हुई है। बाप सोनार का भी काम करते हैं। पतित आत्माएं (जिनमें) खाद पड़ी है उनको प्योर बनाते हैं। खाद पड़ती है ना। चाँदी, ताँबा, लोहा आद। नाम भी ऐसे हैं गोल्डेन एज, सिवर एज्ड, कॉपर, आसर एज्ड। सतोप्रधान, सतो, तमो। बच्चों को यह तो समझाया जाता है यह बातें और कोई मनुष्य नहीं समझावेंगे। एक ही सदगुरू समझाते हैं। सदगुरू अकाल कहते हैं ना। उस सद्गुरू का भी तख़्त चाहिए ना। जैसे तुम आत्मा का अपना–2 तख़्त है उनको भी तख़्त लेना पड़ता है। कहते हैं मैं कौन सा तख़्त लेता हूँ दुनियां में कोई को पता नहीं। वह तो नेती–2 करते आये हैं। हम नहीं जानते हैं। तुम बच्चे भी समझते हो पहले–2 हम कुछ भी नहीं जानते थे। उनको बेसमझ कहा जाता है। भारतवासी समझते हैं हम बहुत समझदार (थे) विश्व का राज्य–भाग हमारा था। अभी बेसमझ बन पड़े हैं। तो कुछ भी नहीं जानते। शास्त्रों में बहुत गपोड़े लगे हुये हैं। कल्प की इतनी आयु है, ईश्वर सर्वव्यापी है। यह भूसा बुद्धि में भरा हुआ है। बाप कहते हैं तुम शास्त्र आद भल कुछ भी पढ़े हो यह सभी अभी भूल जाओ। सिर्फ़ एक बाप को याद करो। गृहस्थ व्यवहार में भी भल रहो। सन्यासी के फॉलावर्स भी अपने–2 घर में रहते हैं ना। कोई भी सन्यासियों के साथ नहीं रहते। कोई सच्चे2 फॉलोवर्स होते हैं तो उनके साथ ही रहते हैं। बाकी तो कोई कहां कोई कहां रहते हैं। तो यह सब बाप बैठ समझाते हैं। इसको कहा जाता है ज्ञान की डांस। योग तो है सायलेंस। ज्ञान के होते हैं डांस। योग में बिल्कुल शांत रहना होता है। डेड सायलेंस; परन्तु इसका भी अर्थ कुछ नहीं जानते। बाप आकर समझाते हैं। सन्यासी लोग सायलेंस के लिए जंगल में जाते हैं; परन्तु वहां थोड़े ही शांति मिल सकती है। एक कहानी भी है रानी का हार गले में पड़ा था और ढूँढ़ती थी बाहर। यह मिसाल है शांति के लिए। बाप इस समय जो बातें समझाते हैं, वह दृष्टांत फिर भक्तिमार्ग में चली आती है। बाप इस समय पुरानी दुनियां को बदल कर नया बनाते हैं। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। यह तो तुम बच्चे ही समझ सकते हो। बाकी तो सभी हैं कांटे। कांटों का जंगल है ना। कोस घर है। सन्यासी भी तमोप्रधान हो गये हैं। यह दुनियां ही तमोप्रधान पतित है; क्योंकि विख से पैदा होते हैं। देवताएं तो विख से पैदा नहीं होते। उन्हों को कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी दुनियां। वायसलेस वर्ल्ड। अक्षर कहते हैं; परन्तु इसका अर्थ नहीं समझते। पत्थर बुद्धि है ना। पत्थर बुद्धि रहते कलियुग में हैं। पारस बुद्धि होते सतयुग में हैं। पारस बुद्धि ही पुनर्जन्म लेते–2 पत्थर बुद्धि बने हैं। तुम ही पूज्य सो पुजारी बनते हो। बाबा के लिए ऐसे नहीं कहा जाता। बाप कब पुजारी बनते नहीं। उनको कितना कलंकित कर देते हैं। बाप न पुजारी बनते, न ठिक्कर–भित्तर में जाते हैं। वह तो पत्थर–भित्ता कण–कण में कह देते परमात्मा हैं। बाप कहते हैं यह बिल्कुल ही जंगली जनावर हैं। बाप को भी पत्थर–भित्तर बना दिया है। तब बाप कहते हैं जब–2 भारत में ग्लानी होती है.....वह लोग तो सिर्फ़ ऐसे ही श्लोक पढ़ते हैं। अर्थ कुछ भी नहीं जानते। तुम उनसे पूछ सकते हो। भगवान कहते हैं मैं इन साधुओं का भी उद्धार करता हूँ।

तो तुम भी पतित ठहरे ना। तब तो पाप काटने लिए गंगा स्नान करने जाते हैं। वह समझते हैं शरीर ही पतित बनता है। आत्मा नहीं बनती। बाप कहते हैं पहले–2 आत्मा पतित बनती है तब शरीर भी पतित बनता है। सोने में ही खाद पड़ती है। फिर ज़ेवर भी ऐसा बनता है; परन्तु वह सभी हैं भक्ति मार्ग में। इसमें तो यह जैसे बादशाह है बड़े–2 साधु ऋषि–मुनि आद। प्रज़ीडेन्ट प्राईम मिनिस्टर आद जो भी बड़े–2 अथॉरिटी वाले होंगे वह भी उनके आगे माथ ज़रूर झुकावेंगे। महऋषि–योगी आद जो भी आते हैं यह सभी हैं सर्वव्यापी कहने वाले। कण–कण में परमात्मा कह देते हैं। उनको ठिक्कर–भित्तर में कह और अपन को फिर कह देते अहम् ब्राह्मास्मि। हम सभी ईश्वर हैं। सर्वव्यापी ईश्वर हैं। बाप समझाते हैं हरेक में तो आत्मा विराजमान है। कहा भी जाता है जीव आत्मा। जीव परमात्मा कहा नहीं जाता। महान आत्मा कहा जाता है। आत्मा ही पार्ट बजाती है। भिन्न–2 शरीर लेती पार्ट बजाती है। तो योग है बिल्कुल सायलेंस। फिर यह है ज्ञान की डांस। बाप की ज्ञान डांस भी इन्हों के सामने होगी जो शौकीन होंगे। बाप जानते हैं किसमें कितना ज्ञान है। कितना उनमें योग का भी नशा है। टीचर तो जानते होंगे ना। बाप भी जानते हैं कौन अच्छे–2 गुणवान बच्चे हैं। अच्छे–2 बच्चों को ही जहां–तहां बुलावा होता है। बच्चों में भी नम्बरवार हैं। प्रजा भी नम्बरवान पुरुषार्थ अनुसार बनती है। यह स्कूल अथवा पाठशाला है ना। पाठशाला है हमेशा नम्बरवार बैठते हैं। समझ सकते हैं यह फलान होशियार हैं। यह मीडियम है। यहां तो यह बेहद का क्लास है। इसमें किसको नम्बरवार बैठा नहीं सकते। बाबा जानते हैं हमारे सामने यह तो ईडियट्स बैठे हुये हैं। जिनमें कुछ भी ज्ञान नहीं है। सिर्फ़ भाव है। बाकी तो न योग है ना ज्ञान है। यह निश्चय है बाबा आया हुआ है उनसे हमको वर्सा लेना है। वर्सा तो सभी को मिलना ही है; परन्तु राजाई में तो नम्बरवार पद हैं ना। जो बहुत सर्विस करते हैं उनको अच्छी प्राइज़ मिलती है। यह पीस प्राइज़ देते रहते हैं। जो राय देते हैं माथा मारते हैं उनको प्राइज़ मिल जाती है। अभी तुम जानते हो विश्व में सच्ची–2 शान्ति श्रीमत पर कल्प पहले भी स्थापन हुई थी। सो अभी तुम कर रहे हो। वह लोग कॉनफ्रेंस करते रहते हैं शांति कैसे हो। बाप कहते हैं उनसे पूछो तो सही विश्व में शांति कब थी? कब सुनी वा देखी? (ि)कस प्रकार की शांति मांगते हो। कब थी? तुम प्रश्न पूछ सकते हो; क्योंकि तुम जानते हो। प्रश्न पूछे और खु(द) जानता न हो तो उनको क्या कहेंगे। तुम अखबारों द्वारा पूछो कि किस प्रकार के शान्ति मांगते हो। शान्तिधाम तो हैं जहां हम आत्माएं रहती हैं ब्रह्मलोक में। बाप कहते हैं एक तो शान्तिधाम को याद करो , दूसरा सुखधाम को याद करो। सृष्टि (के) च(क्र) का पूरा ज्ञान न होने के कारण शास्त्रों आदि में कितने गपोड़े लगा दिये हैं। तुम बच्चे जानते हो हम डबल सिरताज बनते हैं। फिर भक्ति मार्ग में सिंगल ताज वाले बनते हैं; परन्तु उन बिचारों को कुछ भी पता नहीं। उसको कहते ही हैं कांटों का जंगल। तुम जानते हो हम भी फूल थे। फिर कांटे बने हैं। फिर अभी फूल बनते हैं। हम देवता थे। अभी मनुष्य बन गये हैं। देवताओं को देवता कहा जाता है। मनुष्य नहीं; क्योंकि दैवीगुणों वाले होते हैं। जिनमें अवगुण है वह कहते हैं मैं निर्गुण हारे में कोई गुण नहीं। कुछ भी जानते नहीं। शास्त्रों में जो बातें सुनी है वह सिर्फ़ गाते रहते हैं। अच्युतम केशवम्.....अर्थ कुछ नहीं समझते। जैसे तोते को सिखलाया जाता है हू बहू मेंढक मिसल ट्रां–ट्रां करते रहते हैं। जो भी सतसंग है वहां है मेंढकों की ट्रां–ट्रां। बाप समझाते हैं ऐसे मेंढकों का भी मैं कल्याण करता हूँ। पावन बनने लिए ही मुझे बुलाया है बाबा आकर हम सभी पतितों को पावन बनाओ। पावन दुनियां है दो। ब्रह्मलोक को वास्तव में दुनियां नहीं कहेंगे। वहां तो आत्माएं रहती हैं; इसलिए उनको निराकारी दुनियां कहा जाता है। वास्तव में पार्ट बजाने की दुनियां ही है यह। वह है शान्तिधाम। बाप समझाते हैं मैं तुम बच्चों को अपना परिचय बैठ देता हूँ। मैं आता ही उसमें हूँ जो अपने जन्मों को नहीं जान.....यह भी अभी सुनते हैं। मैं इनमें ही प्रवेश करता हूँ। पुरानी पतित दुनियां रावण की दुनियां है ना। जो नम्बरवन पाव(न).....वही फिर नम्बर लास्ट पतित बना है। उनको ही अपना रथ बनाता हूँ। फर्स्ट सो लास्ट में आया है फिर फर्स्ट

में जाना है। चित्र में भी समझाया है ब्रह्मा द्वारा में आदि सनातन देवी–देवता धर्म की रचना रचता हूँ। ऐसे तो नहीं कहते हैं मैं देवी–देवता धर्म में आता हूँ। जिस शरीर में आकर बैठते हैं वही फिर जाकर नारायण बनते हैं। विष्णु कोई और नहीं। ल.ना. के अथवा राधे–कृष्ण की जोड़ी कहो। विष्णु कौन है यह कोई भी नहीं जानते। बाप कहते हैं मैं तुमको सभी वेदों शास्त्रों का चित्रों आदि का राज़ समझाता हूँ। मैं जिसमें प्रवेश करता हूँ वह फिर यह बनते हैं। प्रवृत्ति मार्ग है ना। ब्रह्मा और सरस्वती फिर यह बनते हैं। इनमें मैं प्रवेश कर ब्राह्मणों को ज्ञान देता हूँ। तो यह ब्रह्मा भी सुनते हैं। यह फर्स्ट नम्बर में सुनते हैं। यह है बड़ी नदी ब्रह्मपुत्री। मेला भी सागर और ब्रह्मपुत्री नदी (का) लगता है। जहां सागर और नदी का संगम होता है। मैं इसमें प्रवेश करता हूँ। यह वह बनते हैं। इनको बनने में एक सेकण्ड लगता है। सा. हो जाता है। और निश्चय झट हो जाता है। मैं यह बनने वाला हूँ। विश्व का मालिक बनने वाला हूँ। तो फिर यह गधाई क्या करेंगे। सभी छोड़ दिया। तुमको भी मालूम हुआ है यह दुनियां ख़त्म होनी है तो झट भागी। बाबा ने नहीं भगाया। हां भट्ठी बननी थी। शास्त्रों में तो दंत कथाएं लिख दी हैं। यह भी पार्ट है। कहते हैं कृष्ण ने भगाया। अच्छा कृष्ण ने भगाया तो पटरानी बनाया ना। तुम इस ज्ञान से विश्व के महाराजा महारानी बनते हो। यह तो अच्छा ही है। इसमें गाली खाने की दरकार ही नहीं। कहते हैं कलंक जब लगती हैं तो तब ही कलंकीधर बनते हैं। कलंक लगते हैं शिवबाबा पर। कितनी ग्लानी करते हैं। बराह अवतार, कच्छ–मच्छ अवतार, परशुराम अवतार। कितना हिंसक बना दिया है। इतनी रानियां दे व्यभिचारी बना दिया है। क्या2 शास्त्रों में लिख दिया है। ऐसे2 बातें पढ़ते2 पत्थर बुद्धि बन पड़े हैं। कह देते हैं हम आत्मा सो परमात्मा , परमात्मा सो आत्मा। अभी बाप समझाते हैं ऐसे नहीं है। हम आत्मा सो अभी ब्राह्मण बनते हैं। ब्राह्मण हैं सभी से ऊँच कुल। इनको डिनायस्टी नहीं कहेंगे। डिनायस्टी अर्थात् जिसमें राजाई होती है। यह तुम्हारा कुल है। है बहुत सहज। हम ब्राह्मण सो देवता बनने वाले हैं। इसलिए दैवी गुण जरूर धारण करनी है। सिगरेट, बीड़ी आदि का इन देवताओं को भोग लगाते हो क्या? श्रीनाथ द्वारे में बहुत घी के माल बनाते हैं। भोग इतना लगता है जो फिर दुकान लग जाता है। यात्रु जाकर लेते हैं। मनुष्यों की बहुत भावना रहती है। मक्खियां बैठती गंद करती रहती हैं। वह फिर खाना चाहिए। खुली चीज़ पर जरूर बैठेंगी। गंद करेंगी। सतयुग में तो ऐसी बातें होती ही नहीं। ऐसी मक्खी होगी जो किस चीज़ को खराब (न) करे। ऐसी बीमारी आदि होती ही नहीं। बड़े आदमी पास सफाई भी बहुत होती है। वहां तो ऐसी बातें भी नहीं होतीं। वहां ऐसे रोग आदि होते ही नहीं हैं। यह सब बीमारियां द्वापर से निकलती हैं। बाप आकर तुमको एवर हेल्दी बनाते हैं। तुम पुरुषार्थ करते रहो बाप को याद करने का जिससे ही तुम एवर हेल्दी बनते हो। आयु भी बड़ी होती है। कल की बात है। 150 वर्ष आयु थी ना। अभी तो 35वर्ष है एवरेज ; क्योंकि वह योगी थे। यह भोगी हैं। तुम राजयोगी ,राजऋषि हो। इसलिए तुम पवित्र हो ; परंतु यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। बाजू में रावणराज्य भी है। पुरुषोत्तम युग कहा जाता है , मास वा वर्ष नहीं। बाप कहते हैं मैं कल्प2 पुरुषोत्तम संगम युगे2 आता हूँ। ऐसे अनेक पुरुषोत्तम संगमयुग बीत चुके हैं और अनेक आवेंगे। नई दुनियां और पुरानी दुनियां के बीच को कहा जाता है संगम। यह बाप आकर चेंज करते हैं। बाप रोज2 समझाते रहते हैं। फिर भी कहते हैं ए बात कब भी नहीं भूलना। पावन बनना है तो मुझे याद करो। अपन को आत्मा समझो। देह के सभी धर्म त्यागो। अभी तुमको वापस जाना है। मैं आया हूँ तुम्हारी आत्मा को साफ करने, जिससे फिर शरीर भी पवित्र मिलेगा। यहां पवित्र शरीर होता नहीं ; क्योंकि विकार से पैदा होते हैं। आत्मा जब सम्पूर्ण पवित्र बनती है तो तुम पुरानी जूती को छोड़ते हो। फिर नई मिलेगी। तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। तुमको कोई पूज नहीं सकते ;क्योंकि शरीर तो पावन है ना। तुम्हारा गायन है वंदे मात्रम्। वह लोग वंदे मात्रम् किसको कहते हैं? धरती को तो नहीं कह सकते। धरती को पवित्र तुम बनाते हो। तुम बच्चों को कहा जाता है वंदे मात्रम्।